यात्रा के माध्यम से अधिगम
दीपिका स्कूल के अनुभव

सुमति रामजी

दीपिका स्कूल में हमारे पास ऐसे विद्यार्थी हैं जिन्हें पढ़ने और लिखने में कठिनाई होती है, कुछ विद्यार्थियों के ध्यान देने की अवधि बहुत ही कम है और कुछ धीमी गति से सीखने वाले हैं। जब शिक्षण के पारम्परिक तरीक़ों का उपयोग करने से सकारात्मक परिणाम नहीं मिले तब हमने 2007 में एक छोटे-से प्रयास के साथ शुरुआत की। सामाजिक विज्ञान की शिक्षा के लिए हम अपने विद्यार्थियों को आन्ध्र प्रदेश के भ्रमण के लिए ले गए और देखा कि इसका उन पर अद्भुत प्रभाव पड़ा। इसने उनके व्यक्तित्व को पूरी तरह से बदल दिया। विद्यार्थियों ने जीवन-कौशल सीखे जो एक सन्तुलित दृष्टिकोण के लिए आवश्यक हैं, उन्होंने अपने आसपास की दुनिया में काफ़ी रुचि दिखाई। वे प्राचीन काल के राजाओं द्वारा बनाए गए स्मारकों और मूर्तियों की भव्यता से प्रेरित हुए और जब वे वापिस आए तो उनमें पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से सीखने का एक नया उत्साह था। उस क्षेत्र की फ़सलों के बीच घूमने से उन्हें देश के भूगोल से सम्बन्धित प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।

आन्ध्र प्रदेश की अपनी पहली यात्रा में हम कृष्णा नदी की जल ऊर्जा परियोजनाएँ (श्रीशैलम और नागार्जुनसागर) देखने गए, जहाँ विद्यार्थियों ने बहते पानी की ऊर्जा को विद्युत में परिवर्तित होते हुए देखा। बेलम गुफाओं के स्टैलैक्टाइट तथा स्टैलैग्माइट में सरककर चलते हुए उन्होंने प्रकृति के आश्चर्य का अनुभव किया। गूटी स्टेशन पर ट्रेन का इन्तज़ार करते हुए, स्टेशन मास्टर ने डीज़ल इंजनों पर एक अनौपचारिक बातचीत की व्यवस्था की, जिसमें हमारे विद्यार्थियों ने इंजनों के बारे में अपनी सभी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। रोज़ाना रेलवे स्टेशन में इंजनों के साथ काम करने वाले एक इंजीनियर से डीज़ल इंजन के बारे में जानकारी प्राप्त करना एक नया तरीक़ा था।

केरल में रबड़ के बाग़ानों की यात्रा करते हुए उन्होंने देखा कि रबड़-दूध या लेटेक्स को कैसे इकट्ठा किया जाता है, संसाधित करने के लिए अलग रखा जाता है, पानी निकालने के लिए निचोड़ा जाता है और फिर प्रसंस्करण के लिए रबड़ के कारखाने में भेजा जाता है। वे एक एस्टेट में रहे, स्थानीय भोजन खाया, मधुमक्खी-पालन की प्रक्रिया देखी और लेटराइट मिट्टी से ईंटें बनाने का तरीक़ा समझा। उन्होंने बेहतर गुणवत्ता वाले जायफल के उत्पादन के लिए जायफल के पेड़ों में क़लम बाँधने (ग्राफ्टिंग) के बारे में जानकारी प्राप्त की, कृषि विज्ञान विभाग में गए और कुकुरमुत्ते यानी मशरूम की खेती और कृमि-खाद (वर्मी-कम्पोस्टिंग) के निर्माण के बारे में सीखा। अछूती वनभूमि में एक झरने के शीर्ष पर चट्टान पर अपने पेट के बल लेटे हुए उस झरने को देखने में उन्हें जैसा अपूर्व अनुभव और रोमांच हुआ, वैसा पहले कभी नहीं हुआ था।

विद्यार्थियों ने कप्पड बीच, जहाँ पुर्तगाली खोजकर्ता वास्को डी गामा पहुँचा था, ऑलिव रिडले कछुआ हैचरी और अरक्कल संग्रहालय में प्राचीन फ़र्नीचर और शस्त्रागार का एक खज़ाना देखा, जिससे उन्हें अपने देश के असंख्य आकर्षणों के बारे में पता चला। जब यह यात्रा समाप्त होने को थी तो उनमें से कोई भी घर वापस नहीं जाना चाहता था!

इसके बाद की यात्राओं में वे वेल्लोर और सेंजी (जिंजी) के क़िले देखने गए। वहाँ विद्यार्थियों ने देखा कि उस समय के शासक कितने उदार और धर्मनिरपेक्ष थे कि उन्होंने क़िले के परिसर के भीतर सभी प्रकार की पूजा की अनुमति दे रखी थी। सेंजी क़िले के ऊपर कठिन चढ़ाई चढ़ते हुए हम सभी को उन आरामदायक स्थितियों का एहसास हुआ जिनमें हम रहते हैं!



मारुथुवामलई, कन्याकुमारी

स्थानिक अभिविन्यास सम्बन्धी कठिनाइयों वाले विद्यार्थियों के लिए भूगोल विषय में मानचित्र पढ़ना आमतौर पर एक जटिल कार्य होता है। इसलिए, देश के सबसे दक्षिणी छोर, कन्याकुमारी की यात्रा में, विद्यार्थियों ने देश के इस छोर को देखने के लिए पास की पहाड़ी मारुथुवामलई पर चढ़ाई की और स्थलाकृति को समझा। बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर और अरब सागर के तीन शक्तिशाली जल निकाय नीचे दिखाई दे रहे थे। हमने प्रत्येक समुद्र की ओर संकेत किया और हमारे विद्यार्थियों ने वास्तविक जीवन में सामाजिक विज्ञान सीखा। नागरकोइल के पास वट्टकोट्टई देखकर हमें डचों के ख़िलाफ़ हुए युद्ध में मार्तण्ड वर्मा की वीरतापूर्ण विजय याद हो आई। हमने सेलाइकल, ओलइकल की गूँज पर मार्च किया और सैकड़ों साल पहले के उस दृश्य को फिर से रचा जब डच लोगों ने सैनिकों के एक पैर पर साड़ी (सेलेई) का टुकड़ा तथा दूसरे पैर पर ताड़ का पत्ता (ओलई) बाँधा था और उनसे सेलाइकल, ओलइकल कहलवाते हुए मार्च करवाया था।

कर्नाटक की अपनी स्कूली यात्रा में हमारे विद्यार्थी चित्रदुर्गा, हम्पी, दारोजी भालू अभयारण्य, अइहोळे, पट्टदक्कल, बादामी, कूडलसंगमा और बीजापुर गए। भारत को ताज पहनाने वाली विरासत की समृद्धि उन विद्यार्थियों के हाव-भावों में दिखाई देती थी क्योंकि वे यह सोचकर आश्चर्यचकित थे कि बिना तकनीक की मदद से यह सब कैसे बनाया गया होगा। वे हमेशा यही टिप्पणी करते कि प्राचीन काल के लोग हमसे कहीं अधिक नवीन पद्धतियाँ अपनाया करते थे। विद्यार्थियों ने चित्रदुर्गा में ओनके ओबव्वा के साहसिक कार्य को फिर से अभिनीत किया,



पट्टचित्र रघुराजपुर, ओडिशा

बादामी, पट्टदक्कल और अइहोळे की मूर्तियों पर अचम्भित हुए और उन क्षेत्रों की धर्मनिरपेक्षता को आत्मसात किया। बीजापुर के गोल गुम्बज़ नामक तकनीकी चमत्कार को देखकर हमें आदिल शाह का वैभव याद हो आया।

संस्कृति के इस उत्सव में एक करघे की यात्रा भी शामिल थी, जहाँ हमने एक विशिष्ट इल्कल साड़ी की बुनाई देखी, होस्पेट के शक्तिशाली तुंगभद्रा बाँध पर सूर्यास्त होते हुए देखा, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लिया और ज्ञान की अनबुझी प्यास लिए वापस आ गए।

हमें एक सांस्कृतिक बैठक में आमन्त्रित किया गया था, जिसने हमारे लिए उड़ीसा की यात्रा के द्वार खोले। यहाँ हमारे विद्यार्थी देश भर के मुख्यधारा के विद्यार्थियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े हुए और नृत्य, संगीत और शिल्प जैसी कला के विभिन्न रूपों में भाग लिया। उड़ीसा की भूमि हमें क्या कुछ भेंट में देती है— यह जानना एक अविस्मरणीय अनुभव था।

जगन्नाथ, मुक्तेश्वर और लिंगराजा के मन्दिरों के घुमावदार गुम्बद, विशाल चिल्का झील पर ध्यानमग्न होकर किया गया नौकाविहार, पिपली के शिल्प बाज़ारों में रंगों का पर्व, कोणार्क का राजसी सूर्य मन्दिर और रघुराजपुर के पट्टचित्र कलाकारों की बेजोड़ प्रतिभाओं को देखकर हमारे विद्यार्थियों को अपार हर्ष हुआ।



हुमायूँ का मक़बरा, दिल्ली

क़रीब एक सप्ताह तक चलने वाली छोटी यात्राओं के अनुभव के बाद हमने एक पखवाड़े की यात्राओं की योजना बनाई और देश के बड़े क्षेत्र के हर हिस्से की यात्रा की। हमारी इस यात्रा का विषय था प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, जिसे हमने पश्चिम बंगाल में 1757 के प्लासी के युद्ध के साथ शुरू किया। हम विद्यार्थियों को कोलकाता, बक्सर, कानपुर, लखनऊ, दिल्ली, झाँसी और अमृतसर तक ले गए। इस यात्रा के दौरान उन्होंने जाना कि आख़िर स्वतंत्रता संग्राम था क्या। हम ब्रह्मपुर के एक छोटे-से गाँव से गुज़रे, विविध संस्कृति की बारीकियों को समझा,

कोलकाता में रवीन्द्रनाथ टैगोर के घर ठाकुर बारी को देखा, वहाँ की प्रसिद्ध लूची-आलू दम और रसगुल्ला खाया; इन सब गतिविधियों से स्कूल की यात्रा के स्वाद में एक विशिष्टता आ गई।

जब इतिहास को पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से पढ़ाया जाता है, तो यह बहुत अमूर्त और असत्य लगता है, लेकिन पश्चिम बंगाल से लेकर दिल्ली तक के राज्यों में फैले प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और प्लासी के युद्ध जैसे प्रसिद्ध युद्ध स्थलों का दौरा करने पर विद्यार्थियों ने देखा कि लखनऊ में युद्ध से कितना विनाश हुआ था; कानपुर में कितने मासूमों की जान चली गई थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शामिल प्लासी, कोलकाता, कानपुर, झाँसी और दिल्ली की यात्राओं से लौटने के बाद, विद्यार्थियों ने एक स्टेज शो किया, जिसमें उन्होंने मानव संरचनाओं के माध्यम से इन स्मारकों का निर्माण किया। उन राजाओं और रानियों के शौर्य का अभिनय किया जिन्होंने युद्ध किया था और उन दृश्यों का मंचन किया जिनमें नेताओं ने देश की आज़ादी के लिए अपना बलिदान दिया था। इससे उन्हें इस बात की बेहतर समझ हो पाई कि नेताओं ने किस प्रकार की स्थितियों का अनुभव किया और विद्यार्थियों के रूप में वे दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए क्या कर सकते हैं।

पश्चिम बंगाल में एक जूट मिल में जाकर वे यह समझ पाए कि रेशों से बोरियाँ कैसे बनाई जाती हैं। उन्होंने इस बात को भी महसूस किया कि मज़दूर कितने कष्टमय माहौल में कार्य करते हैं। ट्रेन द्वारा देश के विशाल क्षेत्र की यात्रा करते हुए उन्होंने विभिन्न पर्वत शृंखलाओं, समुद्र, नदियों और विभिन्न प्रकार की मिट्टी में पैदा होने वाली फ़सलों के साथ ही हर राज्य के विविध उद्योगों को भी देखा।



धोलावीरा, गुजरात

गुजरात की यात्रा से भी बहुत कुछ सीखने को मिला। वहाँ का मुख्य आकर्षण लोथल और धोलावीरा का भ्रमण था जहाँ सिन्धु घाटी की सभ्यता विकसित हुई। जब हम खण्डहरों से गुज़रे तो हम फिर से उस गौरवशाली अतीत की रचना करते चले जो इतने रहस्यमय तरीक़े से ग़ायब हो गया है। पास ही में स्थित जीवाश्म पार्क भी उतना ही आकर्षक था। वहाँ हर छोटे पत्थर में छोटे समुद्री जीवों के जीवाश्म थे जो मानो कोई कहानी सुना रहे थे। कच्छ के महान रण की बंजर सुन्दरता, भुजोड़ी के कलाकारों के हाथों का चमत्कार, फिर चाहे वह बढ़ईगिरी हो, ब्लॉक प्रिंटिंग हो, कच्छ की कढ़ाई या बुनाई सभी इस भूमि की सांस्कृतिक विविधता को दोहरा रहे थे। लौटते हुए हमने कोंकण तट की यात्रा की और वहाँ की वनस्पतियों और जीवों की सुन्दरता को मन में बसा लिया। दूधसागर झरने ने हमारे मन पर एक यादगार छाप छोड़ी और हमने चुपचाप ख़ुद से यह वादा किया कि हम इस प्राकृतिक आश्चर्य को देखने के लिए फिर आएँगे।

मध्य प्रदेश का भीमबेटका हमें गुहामानवों के प्राचीन इतिहास में ले गया, जहाँ के चित्रों ने हमें अनन्त काल पहले के पूर्वजों के जीवन के बारे में जानकारी दी। एलोरा के मूर्तिकारों की आकर्षक प्रतिभा, दौलताबाद का भव्य क़िला, औरंगाबाद के बीबी का मक़बरा में औरंगज़ेब द्वारा ताजमहल को फिर से बनाने का प्रयास, उस क्षेत्र की पैठणी बुनाई—सभी जगह सीखने के लिए बहुत कुछ था और जो कुछ सीखा वह स्थायी महत्त्व का था। साँची के स्तूप या एलोरा में मूर्तियों के सामने बैठकर हमारे विद्यार्थियों ने दृश्य कला अभ्यास के रूप वे चित्र बनाए जो उन्होंने अपने सामने देखे।

सांस्कृतिक रूप से इतनी विविध धरती पर हम जिन परिस्थितियों का सामना करते हैं, वे तनाव और मनोभावों से निपटना सिखाती हैं। घर की संरक्षित सुख-सुविधाओं से दूर होने के कारण विद्यार्थी आत्मनिर्भर होना सीखते हैं, अपने सामान को सँभालकर रखना सीखकर वे और अधिक ज़िम्मेदार बनते हैं, दूसरों के साथ समानुभूति रखते हैं, विशेष रूप से भावनात्मक अभिघात से गुज़रने वालों के साथ, अपने माता-पिता की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से निर्णय लेते हैं, छोटी-मोटी समस्याओं को हल करते हैं, समय-प्रबन्धन, नेतृत्व और टीम वर्क जैसे व्यावहारिक कौशल सीखते हैं, विभिन्न संस्कृतियों को स्वीकार करते हैं और स्थितियों की माँग के अनुसार अनुकूलन करते हैं।

दारोजी भालू अभयारण्य में जाकर और वहाँ के आलसी भालुओं को देखकर विद्यार्थियों ने सरकार को पत्र लिखने के बारे में सोचा। पत्र में उन्होंने यह अनुरोध किया कि उस अभयारण्य के आसपास के क्षेत्र में इस्पात संयंत्र के निर्माण की अनुमति न दी जाए, और इस प्रकार, उन भावी नागरिकों के लिए मार्ग प्रशस्त किया जो पर्यावरण के प्रति सजग हैं व नेक काम करने में सक्रिय भूमिका निभाएँगे।

एक अलग तरीक़े से सीखने से, जो सीखा जा रहा है उसकी प्रासंगिकता सामने आती है, जिससे सामाजिक परिवर्तन होता है। ऐसी स्कूली यात्राओं के माध्यम से विद्यार्थी देश का इतिहास सीखते हैं और महसूस करते हैं कि अगर विचारपूर्वक

कार्य किया जाए तो अतीत में की गई ग़लतियाँ नहीं दोहराई जाएँगी। पश्चिम बंगाल के एक गाँव में जब उन्होंने लोगों को चूल्हे के लिए ईंधन के रूप में कोयले और गोबर का उपयोग करते हुए देखा या जब उन्होंने सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और बायोगैस जैसे ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को देखा तो उन्हें जीवन जीने के वैकल्पिक तरीक़ों की सम्भावनाओं का पता चला। पश्चिमी घाटों की जैव-विविधता ने उन्हें सिखाया कि प्रकृति कैसे समग्र रूप से देती है और 'जीवन चक्र' में प्रकृति के प्रत्येक तत्व का होना आवश्यक है। उन बच्चों के साथ बातचीत करके, जिन्हें खाने के लिए पर्याप्त भोजन और पहनने के लिए कपड़े नहीं मिलते हैं तथा जो स्कूली शिक्षा से वंचित हैं, उन्हें महसूस हुआ कि वे कितने भाग्यशाली हैं। एक रक्षा प्रतिष्ठान में रहने से विद्यार्थियों को अनुशासित होने और स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य को प्रमुखता देने के बारे में प्रत्यक्ष रूप से सीखने को मिला। विभिन्न भाषाओं को सुनना, ट्रेन में विभिन्न लोगों से जानकारी प्राप्त करना, घर के भोजन से अलग भोजन करना आदि सांस्कृतिक भारत की विविधता के सबक़ थे।

सामाजिक विज्ञान के वर्तमान पाठ्यक्रम और शिक्षण में तथ्यों को सीखने पर ज़ोर दिया जाता है; विवेचन, अनुप्रयोग या समस्या को हल करने के कौशल पर शायद ही ध्यान दिया जाता है। हमारी स्कूली यात्राएँ सीखने वाले को अमूर्त सिद्धान्त और वास्तविक दुनिया के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम बनाती हैं। यह बात तब नज़र आई जब मेरे विद्यार्थियों ने झाँसी नगर पालिका शब्द पर ग़ौर किया और निष्कर्ष निकाला कि स्थानीय सरकार को नगर पालिका होना चाहिए न कि निगम। शायद वे अपने शहर में नगर पालिका की जगह नगर निगम लिखा देखते रहे हैं। उन्होंने जिस किसी भी शहर या कस्बे की यात्रा की, वहाँ के राजनीति विज्ञान से सम्बन्धित वे अवलोकन किए जो उन्होंने सैद्धान्तिक रूप से पढ़े थे, जैसे चुनावी पोस्टर, सरकारी भवन, मंत्रियों के बंगले देखना। हर रात को यात्रा के सभी स्थानों और उसके संक्षिप्त महत्त्व के बारे में लिखा जाता ताकि अधिगम का सुदृढ़ीकरण हो सके।

प्रत्येक यात्रा के अन्त में विद्यार्थी बहुमूल्य प्रतिक्रिया देते हैं। कुछ दिन एक साथ बिताने से आपसी सम्प्रेषण सम्बन्धी सीमाएँ टूट जाती हैं, यहाँ तक कि न बोलने वाला बच्चा भी यह बताता है कि यात्रा का उस पर क्या प्रभाव पड़ा। विद्यार्थी हमें बताते हैं कि किस चीज़ ने उन्हें सबसे ज़्यादा प्रभावित किया, किस चीज़ से उन्हें परेशानी हुई और क्या अलग हो सकता था।

हर यात्रा के बाद शिक्षक पूरे भ्रमण की एक रिपोर्ट और खर्च का विवरण प्रस्तुत करते हैं ताकि बाद की यात्रा के लिए बजट और योजना में बदलाव के बारे में चर्चा की जा सके। माता-पिता के साथ बैठक की जाती है जिसमें विद्यार्थियों की ताक़त और गुणों पर चर्चा की जाती है, उनके अच्छे व्यवहार पर प्रकाश डाला जाता है, जिससे माता-पिता से उन्हें अधिक स्वीकृति और प्रशंसा प्राप्त होती है। यदि चिन्ता की कोई बात नज़र आई हो तो उसे स्पष्ट किया जाता है ताकि स्कूल और अभिभावक दोनों की सहायता से उस स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके। कक्षा-शिक्षकों से विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तनों पर ध्यान देने के लिए कहा जाता है और निश्चित रूप से विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्तर में वृद्धि तथा विवेचन, विश्लेषण, समझ व तर्क के बेहतर समालोचनात्मक कौशल देखने में आते हैं; और ये सारी बातें उस समाज की बारीक समझ विकसित करने में महत्त्वपूर्ण हैं जिसमें हम रहते हैं। न केवल भारतीय संस्कृति बल्कि भौतिक भूभाग की विविधता का अनुभव करके उसके बारे में सीखने, उसे आत्मसात करने और उसका अनुकूलन करने के लिए हर साल देश के बड़े क्षेत्र के हर हिस्से की स्कूली यात्रा का आयोजन किया जाता है। इसके लिए सावधानीपूर्वक विचार करके योजना बनाई जाती है; जिससे हमारे द्वारा अपनाए गए विविध तरीक़ों से लाभान्वित हुए सीखने की अक्षमता वाले विद्यार्थियों का समग्र विकास होता है।

परियोजना में शामिल प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम की उन्नति को देखते हुए यह स्पष्ट है कि अधिगम के सुगमीकरण की ऐसी कार्यप्रणाली विद्यार्थियों को मुख्यधारा में लाने और उन्हें बेहतर वैश्विक नागरिक बनाने में मदद करेगी क्योंकि इतिहास और भूगोल से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।



सुमति रामजी एक आर्ट्स-बेस्ड थेरेपी प्रैक्टिशनर हैं। इस पद्धति का उपयोग वे दीपिका स्कूल में मिश्रित विकलांगता वाले बच्चों के अधिगम की कमी को दूर करने के लिए करती हैं। वे इन बच्चों को सामाजिक विज्ञान, भारतीय संस्कृति एवं विरासत, मौखिक भाषा विकास और कार्यात्मक गणित जैसे विभिन्न विषय पढ़ाती हैं। वे विभिन्न स्थानों की यात्रा करने और विविध संस्कृतियों को समझने में गहरी रुचि रखती हैं। उनका मानना है कि यात्रा अधिगम को बढ़ाने के लिए एक बहुत ही प्रभावी साधन है। उनसे sumathiramjee@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल